परिचय

- विदेशी शासन का प्रारम्भ - 1757 प्लासी के युद्ध के बाद।

↓

100 वर्ष बाद

- 1857 में विदेशी शासन के विरुद्ध पहला बड़ा आंदोलन भारतीयों के द्वारा किया गया।
- कारण : पिछले 100 वर्षों में कम्पनी के द्वारा जो अन्याय पूर्ण शासन भारतीयों पर किया वे सभी विद्रोह के कारण थे ।

क्रांति के कारण

राजनीतिक एवं प्रशासनिक कारण :-

- अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति (लॉर्ड वैलेजली की सहायक संधि प्रथा एवं लॉर्ड डलहौजी की गोद निषेध प्रथा) ।
- भारतीय जमीदारों के विरुद्ध अपमानजनक व्यवहार नीति ।
- मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर के प्रति अपमानजनक व्यवहार ।
- भारतीय मुसलमानों में नाराजगी ।
- अंग्रेजी प्रशासन में भ्रष्टाचार व लूट-खसोट।
- 1833 ई. के चार्टर एक्ट के प्रावधान तथा उनकी अवहेलना।

आर्थिक कारण :-

- भारतीय उद्योग-धंधों का शोषण एवं उनको चौपट करना ।
- अंग्रेजों द्वारा अपनाई गई दोषपूर्ण भू-राजस्व पद्धति ।

- भारत के कपड़ा उद्योग के कच्चे माल पर कम निर्यात कर लगाना ।
- इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप भारतीय परम्परागत उद्योगों का आर्थिक शोषण ।
- भारतीय धन का निरंतर निष्कासन ।]

सामाजिक कारण :-

- अंग्रेजों द्वारा भारतीयों को घृणा की दृष्टि से देखना ।
- दोषपूर्ण पाश्चात्य शिक्षा नीति ।

धार्मिक कारण :-

- अंग्रेजों द्वारा दोषपूर्ण पैतृक सम्पत्ती कानून का निर्माण ।
- 1813 ई. के चार्टर एक्ट के तहत् ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार की स्वीकृति प्रदान करना ।
- अंग्रेजों द्वारा मंदिरों व मस्जिदों में सम्पत्ती कर लगाना ।

सैनिक कारण :-

क्रांति के पूर्व के विद्रोह-

- 1806 ई. का वैल्लोर विद्रोह, 1824 ई. का बैरकपुर विद्रोह, 1849 ई. का बंगाल की 22 वीं नेटिव इंफेन्ट्री आदि ।
- विभिन्न युद्धों में अंग्रेजों की पराजय एवं भारी क्षति - अफगान युद्ध 1849 ई., क्रिमिया युद्ध, पंजाब युद्ध आदि ।
- अंग्रेजी सेना में भारतीय सैनिकों की बढ़ती संख्या ।
(बंगाल तथा अवध में सैनिक असंतोष) ।
- वेतन, भत्ते, पद तथा पदोन्नति के संबंध में भारतीय सैनिकों के साथ अपमानजनक व्यवहार ।
- 1854 ई. के डाक घर अधिनियम के तहत् भारतीय सैनिकों को दी जाने वाली निशुल्क डाक सुविधा को समाप्त कर दिया गया ।

LET'S LEARN TOGETHER

- 1856 ई. में लॉर्ड कैनिंग के सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम के तहत् भारतीय सैनिकों को भारत से बाहर युद्ध में भेजा जाने लगा ।

तात्कालिक कारण :-

- नई एनफील्ड राईफिल्स में प्रयोग होने वाले चर्बी लगे कारतूसों (सूअर तथा गाय की चर्बी) का प्रयोग ।
- हिन्दू तथा मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाला ।

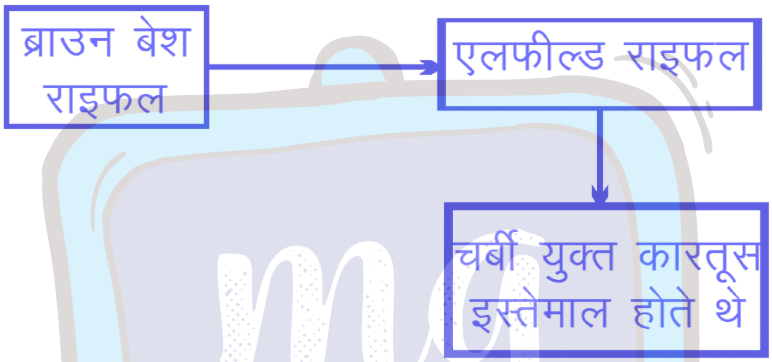



LET'S LEARN TOGETHER



सैन्य विद्रोह कैसे शुरू हुए?

- प्रारम्भ 10 मई 1857 को मेरठ छावनी से प्रारम्भ - हुआ।

दिल्ली में विद्रोह

- नेतृत्व - बहादुरशाह II / बहादुर शाह जफर
- जैसे-जैसे विद्रोह की खबरें एक शहर से दूसरे शहर पहुंचती गयी वैसे-वैसे सिपाही हथियार उठाते गये।
- सिपाही किसी विशेष संकेत के साथ अपनी कार्यवाही शुरू करते थे।
- सबसे पहले उन्होंने शस्त्रागार पर कब्जा किया और सरकारी खजाने को लूटा।
- विद्रोह में आम लोगों के भी शामिल हो जाने के साथ साथ विद्रोह का दायरा फैल गया।
- साहूकार और अमीर भी विद्रोहियों के गुस्से का शिकार बनने लगे।

LET'S LEARN TOGETHER

ब्रिटिश शासन ताश के किले की तरह बिखर गया।

संचार के माध्यम

- विभिन्न छावनियों के सिपाहियों के बीच अच्छा संचार बना हुआ था।
- रात में सिपाहियों की पंचायतें जुड़ती थी और उनमें सामूहिक रूप से फैसले लिये जाते थे।

ये योजनाएँ कैसे बनायी गयी?

योजनाकार कौन थे?

- मौजूदा दस्तावेजों के आधार पर इन सवालों के सीधे सीधे जवाब देना कठिन है।
- संभवतया इस विद्रोह की योजना लंदन में बनायी गयी थी।

1. अजीमुल्ला खान नाना साहब के सलाहकार
2. रंगो जी बापू - सतारा के राजा के सलाहकार

- क्रान्ति का प्रतीक – कमल का फूल और रोटी
- प्रारम्भ करने की तिथि - 31 मई 1857

नेता और अनुयायी :-

- अंग्रेजों से लौहा लेने के लिए नेतृत्व और संगठन जरूरी था।
- विद्रोहियों ने ऐसे लोगों की शरण ली जो अंग्रेजों से पहले नेताओं की भूमिका निभाते थे। जिन्हें अंग्रेजों ने उखाड़ फेंका था।

जैसे - मेरठ के सिपाहियों ने दिल्ली पहुंच कर मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को नेतृत्व स्वीकार करने के लिए मना लिया।

- कानपुर में पेशवा बाजीराव द्वितीय के उत्तराधिकारी नाना साहब को नेता बनाया।
- झाँसी रानी लक्ष्मीबाई –

LET'S LEARN TOGETHER

- अवध (लखनऊ) - नवाब वाजिद अली शाह के पुत्र बिरजिस कद्र और बेगम हजरत महल
- आरा (बिहार) जमींदार कुंवर सिंह
- इन विस्थापित शासकों में से अधिकांश स्थानीय लोगों के दबाव के कारण और कुछ अपने स्वयं के उत्साह के कारण विद्रोह में शामिल हुए थे ।
- कुछ अन्य स्थानों पर स्थानीय नेता या धार्मिक नेता सामने आ चुके थे। जैसे - छोटा नागपुर स्थित सिंहभूम के एक आदिवासी काश्तकार गोनू ने कोल आदिवासियों का नेतृत्व संभाला था ।

अफवाहें और भविष्यवाणियाँ -

- कई तरह की अफवाहों और भविष्यवाणियों के जरिए लोगों को उठ खड़ा होने के लिए उकसाया जा रहा था।

जैसे :-

1. गाय व सुअर की चर्बी का लेप लगे हुए कारतूस ।
2. अंग्रेजों ने बाजार में मिलने वाले आटे में गाय और सुअर की हड्डियों का चूरा मिलवा दिया।
3. अंग्रेज हिंदुस्तानियों को ईसाई बनाना चाहते हैं ।
4. भविष्यवाणी : प्लासी के युद्ध के 100 साल पूरे होते ही 23 जून 1857 को अंग्रेजी राज खत्म हो जायेगा ।

- इन अफवाहों और भविष्यवाणियों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह करने के लिए महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारण प्रदान किये ।

LET'S LEARN TOGETHER

लोग अफवाहों में विश्वास क्यों कर रहे थे?

- अफवाह तभी फैलती है जब उसमें लोगों के जहन में गहरे दबे डर और संदेह की गूंज सुनायी देती है।
- लोगों के पास अफवाहों पर विश्वास करने का आधार था :-

1. 1813 इस्वी में ईसाई मिशनरियों को भारत में ईसाई धर्म का प्रचार करने की खुली छूट दे दी गयी।
2. 1856 ई. में लॉर्ड कैनिंग के द्वारा लागू " सामान्य सेना भर्ती अधिनियम" ।
3. लॉर्ड डलहौजी द्वारा लागू " धार्मिक निर्योग्यता अधिनियम 1850" - ईसाई धर्म ग्रहण करने वाले व्यक्ति को पैतृक सम्पत्ति में अधिकार दिया गया ।
4. 1829 सती प्रथा को खत्म किया गया लॉर्ड विलियम बैंटिक के द्वारा ।
5. 1856 - विधवा विवाह को मान्यता दी गयी ।
6. लॉर्ड डलहौजी की राज्य हड़प नीति ।

अवध की कहानी -

- 1801 ई. में लॉर्ड वेलेजली के द्वारा अवध के नवाब से सहायक संधि की गयी। संधि की शर्तें :-

1. नवाब अपनी सेना खत्म कर दें।
2. रियासत में अंग्रेज टुकड़ियों की तैनाती की इजाजत दे।
3. राज दरबार में एक ब्रिटिश रेजीडेंट की नियुक्ति की जाये और नवाब उसी की सलाह पर काम करें।

LET'S LEARN TOGETHER

- नवाब सैनिक ताकत से वंचित हो जाने के बाद दिनोदिन अंग्रेजों पर निर्भर होते गये ।
- अवध सम्पन्न रियासत थी ।
- लॉर्ड डलहौजी : " ये गिलास फल एक दिन हमारे ही मुंह में आकर गिरेगा ।"
- 1856 में लॉर्ड डलहौजी के द्वारा अवध का अधिग्रहण कर लिया गया ।
- नवाब : वाजिद अलीशाह पर कुशासन का आरोप लगाया गया ।
- नवाब के निष्कासन से पैदा हुए दुख और अपमान के बारे में एक ने लिखा था –

"देह से जान जा चुकी थी। शहर की काया बेजान थी.....। कोई सड़क, कोई बाजार और घर ऐसा न था जहां से जान-ए-आलम से बिछड़ने पर विलाप का शोर न गूंज रहा हो । "

"फिरंगी राज का आना और एक दुनिया का खात्मा"

अवध के नवाब

↓

ताल्लुकदार / जागीरदार - जागीरें थी ।

↓

किसान / रैयत

- अंग्रेजों से पहले तालुकदार ही जनता का उत्पीड़न करते थे लेकिन वे बुरे वक्त में किसानों की मदद भी करते थे।
- अंग्रेजों ने इस दुनिया का खत्मा कर दिया।
- ताल्लुकदारों की सत्ता को उखाड़ फेंका।

LET'S LEARN TOGETHER

नई व्यवस्था : अब इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि कठिन वक्त में या फसल खराब हो जाने पर सरकार राजस्व की मांग में कोई कमी करेगी या वसूली को कुछ समय के लिए टाल दिया जायेगा ।

- अवध के ताल्लुकदारों और किसानों के मन में इस नई व्यवस्था के प्रति बहुत रोष था ।
- इसलिए इन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह में बहुत बढ़ चढ़ कर भाग लिया ।
- बंगाल की ब्रिटिश भारतीय सेना में सर्वाधिक सैनिक अवध के ही थे ।
- अवध को तो "बंगाल आर्मी की पौधशाला" कहा जाता था ।

विद्रोही क्या चाहते थे?

- विद्रोहियों के नजरिये को समझने के लिए हमारे पास उनके द्वारा जारी घोषणाओं व इश्तहारों के सिवा कुछ ज्यादा चीजें नहीं हैं ।

इसलिए, मजबूरन हमें अंग्रेजों के दस्तावेजों पर निर्भर रहना पड़ता है ।

1. एकता की कल्पना : इस विद्रोह को एक ऐसे युद्ध के रूप में पेश किया जा रहा था जिसमें हिंदुओं और मुसलमानों, दोनों का नफा नुकसान बराबर है । हिन्दू और मुस्लमान दोनों को लड़ाई में शामिल होने के लिए आह्वान किया गया ।
2. उत्पीड़न के प्रतीकों के खिलाफ : ब्रिटिश राज से संबंधित हर चीज का विरोध किया जा रहा था ।
   - फिरंगियों पर स्थापित और सुंदर जीवन शैली को नष्ट करने का आरोप लगाया जाता था।
   - विद्रोही अपनी उस दुनिया को दोबारा बहाल करना चाहते थे ।
3. वैकल्पिक सत्ता की तलाश : विद्रोही नेता अठारहवीं सदी की पूर्व - ब्रिटिश दुनिया को पुनर्स्थापित करना चाहते थे ।

दमन

- इस विद्रोह को कुचलना अंग्रेजों के लिए आसान नहीं था।
- ब्रिटेन से सैनिक टुकड़ियां मंगवाई गयी ।
- विद्रोह का दमन करने के लिए अंग्रेजों ने सैनिक ताकत का भयानक पैमाने पर इस्तेमाल किया।
- समूचे उत्तर भारत में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया।
- कानून और मुकदमों की सामान्य प्रक्रिया रद्द कर दी गयी थी – विद्रोही की केवल एक ही सजा हो सकती थी। सजा – ए –मौत।
- सितम्बर 1857 में दिल्ली पर अंग्रेजों ने वापस कब्जा जमा लिया ।

विद्रोह की छवियां

- विद्रोह की छवि क्या थी, इस बारे में जानने के लिए हमारे पास बहुत कम दस्तावेज मौजूद हैं। केवल विद्रोहियों की कुछ घोषणाऐं, अधिसूचनाऐं तथा नेताओं के कुछ पत्र हैं।
- इस बारे में सरकारी ब्यौरो की कमी नहीं है, लेकिन ये औपनिवेशिक सरकार द्वारा लिखे गये ब्यौरे हैं।
- इस विद्रोह के बारे में कई चित्र, पोस्टर, कार्टून उपलब्ध हैं ।

1. रक्षकों का अभिनंदन : अंग्रेजों द्वारा बनायी गयी कुछ तस्वीरों में अंग्रेजों को बचाने और विद्रोहियों को कुचलने वाले अंग्रेज नायकों का गुणगान किया गया है ।



"द रिलीफ़ ऑफ़ लखनऊ" चित्रकार टॉमस जोन्स बार्कर. 1859

- चित्र में लखनऊ में विद्राहियों के दमन के बाद का दृश्य दिखाया गया है।
- लखनऊ का रेजीडेंट हेनरी लॉरेंस मारा गया।
- दमन - सितम्बर में आउट्रम और हेनरी हेवलॉक।
- कमाण्डर कॉलिन कैम्पबेल ।

अंग्रेज औरतें तथा ब्रिटेन की प्रतिष्ठा :-



"इन मेमोरियम", चित्रकार जोजेफ नोएल पेटन, 1859



कानपुर में सिपाहियों से अपनी रक्षा करती मिस व्हीलर।

प्रतिशोध और सबक :-

- जैसे जैसे ब्रिटेन में गुस्से और सकते का माहौल बनता गया, बदले की मांग बुलंद होती गयी। विद्राह के बारे में प्रकाशित चित्रों एवं खबरों ने ऐसा माहौल रच दिया ।



जस्टिस (न्याय), पन्च, 12 सितंबर 1857
चित्र के नीचे पट्टी पर लिखा है–"कानपुर में हुए भीषण जनसंहार के समाचार ने समूचे इंग्लैंड में प्रतिशोध की गहरी चाह और भयानक अपमान का भाव पैदा कर दिया है।"

LET'S LEARN TOGETHER



चित्र के नीचे पट्टी पर लिखा है- "बंगाल टाइगर से ब्रिटिश शेर का प्रतिशोध", पन्च, 1857

दहशत का प्रदर्शनः-

दया के लिए कोई जगह हीं :-



राष्ट्रवादी दृश्य कल्पना :-

- ब्रिटिश समाचार पत्रों में छपे चित्रों को देखकर वहां की जनता विद्रोहियों को कुचल डालने की आवाज उठा रही थी दूसरी तरफ भारतीय राष्ट्रवादी कल्पना को निर्धारित करने में मदद कर रहे थे ।

LET'S LEARN TOGETHER



फ़िल्मों और पोस्टरों ने रानी लक्ष्मीबाई की छवि को एक मर्दाना योद्धा के रूप में स्थापित करने में मदद की।

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध–व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवार।
महाराष्टर–कुल–देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।



LET'S LEARN TOGETHER